# इकाई 2 औपचारिकतावाद तथा तात्विकवाद*

**संरचना**


2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 आर्थिक नृविज्ञान/समाजशास्त्र : विचारधाराएँ

2.2.1 औपचारिकतावाद

2.2.1.1 पूर्व औद्योगिक तथा औद्योगिक अर्थव्यवस्थायें

2.2.1.2 कार्ल पोलान्नयी तथा स्वविनियमित बाजार

2.2.2 तात्विकवाद

2.2.2.1 अंतर्निहितता तथा तात्विक अर्थशास्त्र

2.2.2.2 पारस्परिकता, पुनर्वितरण तथा आदान–प्रदान

2.3 भारत में दान धर्म : मार्सेल मौस द्वारा उपहार आदान–प्रदान का एक अध्ययन

2.3.1 उपहारों के आदान–प्रदान की आलोचना

2.4 सारांश

2.5 संदर्भ

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 2.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे :–

- अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के अर्थ तथा प्रकृति की व्याख्या;
- औपचारिकतावाद तथा तात्विकवाद से संबंधित दो विचारधाराओं की व्याख्या;
- औपचारिक आधुनिक अर्थशास्त्र तथा इसके समर्थक;
- तात्विकवादी विचार धारा से जुड़े विद्वानों के प्रमुख विचार – जैसे कार्ल पोलान्नयी; और
- मार्सेल मौस के उपहार आदान–प्रदान सिद्धांत की समीक्षा।

## 2.1 प्रस्तावना

इससे पहले की इकाई में समाज, संस्कृति और अर्थशास्त्र में आपने समाज, संस्कृति तथा अर्थशास्त्र के बीच सम्बंधों तथा शास्त्रीय व नवशास्त्रीय विचारकों के विचारों में अंतरों के बारे में पढ़ा। यह इकाई आपको पूंजीवादी प्रणाली की सार्वभौमिकता तथा प्रकृतिकता के बारे में बताया जायेगा। आर्थिक नृविज्ञान तथा समाजशास्त्र के अनुयायी के बीच बहस रही है। यह इकाई आपको औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावादी विचारधाराओं के बीच छिड़ी बहस के बारे में जानकारी दी जायेगी।

* डॉ. कुसुम लता द्वारा लिखित।

## 2.2 आर्थिक नृविज्ञान/समाजशास्त्र : विचारधाराएँ

औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद – ये दोनों आर्थिक नृविज्ञान की दो विचार धाराएँ हैं। 1950 के मध्य में इन दो धाराओं का अस्तित्व सामने आया था। औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद के बीच अंतर की स्थापना हंगरी के आर्थिक एवं इतिहास मर्मज्ञ कार्ल पोलन्नयी ने किया था। इससे पहले जर्मनी के समाजशास्त्री मैक्स वेबर औपचारिकता तथा तात्विकता की तर्कसंगतता पर सवाल उठा चुके थे। कार्ल कोलान्नयी ने तर्क दिया था कि अर्थव्यवस्था की व्याख्या दो शब्दावलियों के माध्यम से की जा सकती है – एक है औपचारिक, दूसरा है तात्विक। इस विश्लेषण से आर्थिक नृविज्ञान और समाजशास्त्र में दो विचारधाराओं का जन्म हुआ, ये विचारधारायें तात्विक तथा औपचारिक कहलाई। इनका अतिस्तत्व दो पद्धति परक विवादों के आधार पर हुआ था। औपचारिकतावाद निगमनात्मक तथा अनुभवात्मक सोच पर आधारित है, जबकि तात्विकतावाद वर्णनात्मक तथा अनुभवात्मक सोच पर आधारित है। औपचारिकतावाद का मूल बहुसंख्यक लोगों की आर्थिक तर्कसंगतता के विचार पर आधारित है। जबकि तात्विकतावाद के बारे में कार्ल पोलन्नयी सहित अनेक विचारकों का मत है कि अर्थव्यवस्था सामाजिक तथा सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित होती है। पोलन्नयी के विचारों ने आर्थिक नृविज्ञान में नई विचारधारा को जन्म दिया, जिसे उपस्तंभवादी उन्मुखता कहा जाता है। इस विचार धारा के समर्थकों में पॉल वोहानन, पेड्रो कैरास्को, लुइस डूमॉन्ट, टीमोथी अर्ले, मॉरिस गोडलियर, क्लोड मीलेसॉक्स, जॉन मूरा, मार्शल साहलिन्स, रोडा हैलप्रिन, एरिक वुल्फ तथा जॉर्जडॉल्टन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। नीचे दिये गये खण्ड में हम औपचारिक तथा तात्विक अर्थव्यवस्थाओं की विस्तार से व्याख्या करेंगे –

### 2.2.1 औपचारिकतावाद

औपचारिकतावाद पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों से जुड़ा है। जो स्पष्ट रूप से पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं से बिल्कुल अलग है। इसका अर्थ यह भी है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किये जाते हैं। जिसके कारण गैर औद्योगिक अर्थव्यवस्थायें बाजार अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के अधीन आ जाती हैं। औपचारिकतावादी सिद्धांतकार यह तर्क देते हैं कि नवशास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत के औपचारिक नियम मुख्य रूप से पूंजीवादी बाजार से जुड़े समाजों के अध्ययन से लिये गये हैं। इन्हें गैर पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं की प्रकृति तथा उनकी गतिशीलता की व्याख्या करने के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। उदाहरण के लिए सुप्रसिद्ध औपचारिकतावादी अमेरिकन नृविज्ञानी 'मैलविले हर्सकोटिक्स' ने अपनी पुस्तक 'द इकोनॉमिक लाइफ ऑफ प्रीमिटिव प्यूपिल' में इस दृष्टिकोण का समर्थन किया है। उसने लिखा है कि विरलपन और बहुमतता का अस्तित्व सार्वत्रिक रूप से स्वीकार किया जाता है। अलग–अलग उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हर जगह यह दोनों ही माध्यम प्रयोग में लाए जाते हैं। नीचे औपचारिकतावादी विशेषता की व्याख्या की जायेगी।

#### 2.2.1.1 पूर्व औद्योगिक तथा औद्योगिक अर्थव्यवस्थायें

कार्ल पोलन्नयी ने अपनी प्रभावशाली पुस्तक – 'द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन' में लिखा है कि ऐसे सैद्धांतिक मानदंडों की उत्पत्ति यूरोप की पूर्व औद्योगिक दुनिया के औद्योगिक दुनिया में बदल जाने के कारण हुई है। औद्योगिक क्रांति के कारण उत्पादन के

तरीकों तथा विचारों, विचारधाराओं, सामाजिक तथा आर्थिक नीतियों में भारी बदलाव आया। अपनी पुस्तक 'द ग्रेट ट्रांसफोर्मेशन' में कार्ल पोलेन्नयी ने 19वीं शताब्दी के आरंभिक दौर में ब्रिटेन तथा शेष औद्योगिक जगत में बाजारवादी अर्थव्यवस्था के परिणामों का विश्लेषण किया है। उसके अनुसार बाजारवादी पूंजीवाद ने सभी उत्पादों तथा सेवाओं को एकल स्तरीय पैसे के इर्द–गिर्द वस्तुकृत तथा व्यवसायकृत कर दिया है। जबकि पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में धन केंद्रितता तथा वस्तु केंद्रितता का अस्तित्व नहीं था बल्कि पूरी व्यवस्था सामाजिक संबंधों पर आधारित थी इसका अर्थ यह नहीं है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में बाजार नहीं थे। पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में बाजार थे, परंतु अर्थव्यवस्था बाजार के नियमों से संचालित नहीं थी। परंतु आपूर्ति का दवाब नहीं था। इस्तेमाल किये जाने वाली चीजों के अलावा बाजार पूंजीवाद श्रमिकों का भी वस्तुकरण कर देता है। पोलेन्यी के अनुसार पूंजीवाद लाभ के कद को बढ़ा देता है और बाजार समाज तथा जीवन मूल्यों पर हावी हो जाता है। हर चीज का (जमीन तथा श्रम) वस्तुकरण करते हुआ हर चीज बेची, या खरीदी जा सकती है। पोलेन्यी के अनुसार बाजार आधारित अर्थव्यवस्था एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जो केवल और केवल बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में बाजार पूंजीवाद की नौकर हो जाती है और वह व्यवस्था का एक ऐसा हिस्सा बन कर रह जाती है जो पूंजीवाद को सहज स्वीकार्य साबित करने में लगी रहती है। पोलन्नयी ने बाजार पूंजीवाद के अलावा अन्य संबंधित चीजों का अध्ययन करने के लिये पूर्वकालिक साम्राज्यों का अध्ययन भी किया।

### 2.2.1.2 कार्ल पोलन्नयी तथा स्व–नियंत्रित बाजार

पोलेन्नयी तर्क देता है कि 19वीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति ने ऐसे विचारकों को जन्म दिया जिन्होंने बाजार–उदारवाद का विकास किया, इस विश्वास के साथ कि सभी अर्थव्यवस्थायें स्व–नियंत्रित बाजारों के अधीन हों। उदाहरण के लिए एडम स्मिथ जिन्हें शास्त्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था का जनक माना जाता है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया था कि बाजारों को नियंत्रित करने में मांग और पूर्ति के नियम अदृश्य हाथों की तरह काम करेंगे। 'दुनिया की कार्यशाला' में ब्रिटेन का नेतृत्व होने के साथ–साथ स्व नियंत्रित बाजार अथवा स्वतंत्र बाजार, बाजारों की परिकल्पना विश्व अर्थव्यवस्था का प्रमुख सिद्धांत बन गई।

पोलेन्नयी ने स्व–नियंत्रित बाजारों के केंद्रीय सिद्धांत को नकार दिया था। उनका तर्क था कि स्व–नियंत्रित बाजारों की परिकल्पना जमीनी नहीं है क्योंकि इसमें अंदरूनी घटनाक्रमों को संयमित रखने की क्षमता का अभाव है तथा सरकारी हस्तक्षेप को अनिवार्यता की संभावना निहित है। स्वतंत्र या स्वचालित बाजारों की बातें इसलिए चर्चा में है क्योंकि पूंजीवादियों के इसमें निहित स्वार्थ हैं। स्वतंत्र या स्वचालित या आत्मनिर्भर बाजार का मतलब है बाजार–व्यवस्था में पूंजीवाद का पूरा–पूरा दखल। इस तरह तो बाजारों के स्वतंत्र अस्तित्व का मिथक ही खत्म हो जाता है। यही तो औपचारिक अर्थव्यवस्थाओं का प्रमुख विचार है।

**बाक्स 2.0**

क्या आप जानते हैं 1930 में आई मंदी संयुक्त राज्य अमेरिका में स्टॉक मार्केट के ध्वस्त हो जाने के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आई थी। इससे बाजारों के स्वतंत्र अस्तित्व का तिलिस्म भी पूरी तरह टूट गया था। संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार पर दबाव बनाया गया था कि वह हस्तक्षेप करे। 1933 से 1945 तक के अंतराल में

फ्रेंकलिन रूजवैल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति थे। उन्होंने अर्थव्यवस्था को संकट से उबारने के लिए सरकार को अधिक से अधिक खर्च करने का सुझाव दिया था।

1932 के अपने एक भाषण में स्वतंत्र बाजारों वाली अर्थव्यवस्था की उन्होंने कटु आलोचना की थी। उन्होंने कहा था – ''जो आदमी आपसे यह कहता है कि उसे व्यापार से सरकारी हस्तक्षेप नहीं चाहिए, वही स्वयं बाजार में दखल देना चाहता है। ऐसा कहने के पीछे उसके अनेक निहित स्वार्थ हैं। वह स्वयं वाशिंगटन पहुंचकर सरकार से संपर्क साधाता है और कहता है कि उसे सरकार से लाभकारी मूल्य अपने उत्पादों को बेचने की आजादी या अनुमति चाहिए। जब चीजें बुरी तरह बिगड़ जाती हैं, जैसेकि दो वर्ष पहले बिगड़ी तब वह बड़ी फुर्ती से संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार के पास जाता है और कहता है कि उसे आसान शर्तों पर ऋण चाहिए। वित्तीय परिषद की पुनर्संरचना इसी का परिणाम है। हर समूह ने अपने स्वार्थों के लिए सरकारी संरक्षण की मांग की है। यह महसूस किये बिना कि सरकार का काम किसी समूह विशेष के पक्ष में फैसले लेना नहीं है। सरकार का कर्तव्य है व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकारों तथा सभी नागरिकों की निजी सम्पत्ति की रक्षा करना।''

इससे यह साबित होता है कि शास्त्रीय राजनैतिक अर्थव्यवस्था के धर्म के ठीक विपरीत बाजार के स्वतंत्र अस्तित्व वाली अर्थव्यवस्था जानबूझकर की गयी सामाजिक क्रिया का प्रतिफल है जैसा कि पोलेन्नयी ने लिखा है – ''स्वतंत्र बाजार की योजना तो बनाई गई थीं, परंतु वह सुनियोजित नहीं थी'' (के. पोलेनी, 1957) (द ग्रेट ट्रांस्फोर्मेशन द पॉलिटीकल एण्ड इकॉनोमिक ऑरिजिन्स ऑफ अवर टाइम, बीकन प्रेस, वोस्टन : 141)।

औपचारिक अर्थव्यवस्था या पूंजीवादी अर्थव्यवस्था जो स्व नियंत्रित तंत्र की बात करती है, वह इस विचार की समर्थक है कि मनुष्य के व्यवहार के केंद्र में अधिक से अधिक मुनाफा कमाना होता है, इसे स्वार्थ आधारित सम्बंध या आर्थिक सामर्थ्य केंद्रित संबंध कहा जाता है। इसके लिए व्यक्ति या तो दुर्लभ आर्थिक सामर्थ्य को चुनता है या पसंदीदा आर्थिक सामर्थ्य को चयन का आधार बनने वाले नियमों को तर्कसंगत कहा जाता है जो औपचारिक अर्थव्यवस्था का एक और प्रमुख पहलू है। औपचारिक अर्थव्यवस्था में तर्कसंगत कार्य को आपकी रुचि के अनुसार आपका अपना फैसला माना जाता है। साधन ही साध्य तक ले जाते हैं, चाहे प्रकृति के नियमों की गुणवत्ता के कारण या कार्य के नियमों की गुणवत्ता के कारण। अर्थव्यवस्था का यह औपचारिक अर्थ 'आर्थिक सामर्थ्य केंद्रित सम्बंध' की तर्क–संगत विशेषता से लिया गया है। 'आर्थिक' तथा 'आर्थिकीकरण' जैसे शब्दों में यह अर्थ ध्वनित है यह चयन की स्वतंत्रता का प्रतीक है। साधनों के विविध उपयोगों के बीच से साधनों की अपर्याप्त क्षमताओं का संदेश मिलता है। पोलेनी के लिए चयन की स्वतंत्रता आशय सदैव साधनों की कमी से नहीं है (पोलेनी, 1977; 25)। वास्तव में समाजों में पर्याप्त व विविध स्रोतों में से अपनी पसंद के स्रोत को चुनने की प्रवृत्ति तीव्रता से उत्पन्न हुई है। पोलेनी ने लिखा है – ''यदि साधनों में विविधता की कमी है तो चयन की प्रक्रिया और भी अधिक धारदार होती जायेगी।'' (फिर वही; 1977)।

पोलेनी के अनुसार नवशास्त्रीय अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य औपचारिक परिप्रेक्ष्य से मानव समाज को अर्थव्यवस्था तथा मानव इतिहास को समझ पाना सम्भव नहीं है। क्योंकि प्रजाति अर्थशास्त्र को बाजार परिप्रेक्ष्य तक सीमित कर देने से मनुष्य के इतिहास का बड़ा हिस्सा दृश्य से बाहर हो जायेगा (पोलेनी, 1977 पृ. 6)।

**बॉक्स 2.1**

अर्थशास्त्रीय नृविज्ञान की तात्विकतावादी विचारधारा (इसका प्रमुख प्रतिपादक पोलेनी का छात्र जार्ज डाल्टन था) के मूल में अनुभववादी विचारधारा थी। समाज में चीजों का वितरण किस प्रकार हो रहा है, इसका निरीक्षण करने के बाद ही मनुष्य इसके सिद्धांतों को समझ पाता है। नये प्रकार के आदान–प्रदान तथा वितरण को देखने के बाद यह निष्कर्ष निकला कि सभी आदान–प्रदान व वितरण आर्थिक अधिक समीकरण के सिद्धांतानुसार नहीं हो रहे थे। आदान–प्रदान की अर्थव्यवस्था से नृविज्ञानी पूरी तरह अवगत थे। इसमें पुनर्वितरणात्मक अर्थव्यवस्था की धारणा अंतर्निहित थी। बंदरगाहों के जरिए व्यापार के नियमों के तहत विभिन्न देशों के लोग पहले से ही निर्धारित मूल्यों के आधार पर आदान–प्रदान किया करते थे। (पृ. 11)

तात्विकतावादियों की चुनौती का जवाब स्वघोषित औपचारिकतावादियों ने दिया। औपचारिकतावादियों ने यह दावा किया कि पोलेनी अर्थशास्त्र को ठीक से समझ ही नहीं पाया। अर्थशास्त्र अर्थव्यवस्था की मौजूदगी या गैर–मौजूदगी पर निर्भर नहीं करता। अर्थशास्त्र का सरोकार मनुष्य के विशिष्ट व्यवहार से होता है। लोग अब बाजार में खरीदारी करते है तब उनका पूरा प्रयास होता है कि अच्छी से अच्छी चीज खरीदें और वह भी इस शर्त के साथ कि जितना पैसा उन्होंने खर्च किया है चीज की गुणवत्ता अपेक्षाकृत बेहतर है या नहीं। समाजशास्त्र का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक प्रणालियों के बीच तुलना करना नहीं है। परन्तु यह पता लगाना है कि कौन सी प्रणाली मनुष्य को उस तरह करने में सहयोगी है, जैसा वे करना चाहते है।

तात्विकवाद किसी चीज को स्पष्ट नहीं करते, वे केवल यह बताने का प्रयास करते है कि वे अलग श्रेणी में आते हैं। वे एक विस्तृत सिद्धांत प्रस्तुत करते हैं जो दुर्खीम के प्रकार्यवाद का संस्करण लगता है जिसमें अर्थशास्त्री समाज के स्वरूप को व्यक्तियों के निजी फेसलों का परिणाम मानते हैं। प्रकार्यवादियों के अनुसार समाज अपने अधिकारों के लिये सक्रिय होता है और हर हालत में उसकी चेतना में यह बात प्रबल हो जाती है कि उसे अपना अधिकार प्राप्त करना है जबकि यह प्रवृत्ति मनुष्य को नितांत स्वार्थी बना देती है और उसका व्यवहार जानवरों जैसा हो जाता है।

दुर्खीम के अनुयायियों के लिये आर्थिक संस्थायें सामाजिक एकीकरण के माध्यम होते है। समाज एक नैतिक प्रकार तैयार करता हैं जिससे लोग बहा जाते है। यदि लोगों में नैतिकता हो जाय तो वे दायित्वहीन तथा भावनाहीन मानव समूह मात्र हो और यदि ऐसा नहीं होगा तो समाज में मनुष्यों के जीवन का उद्देश्य संसाधन इकट्ठे करना मात्र रह जायेगा। स्पष्ट प्रश्न यह है कि समाज लोगों को किस तरह प्रोत्साहित करता है। मनुष्यों को प्रोत्साहित करने वाले घटक न रहें तो मनुष्य केवल उन रीति–रिवाजों और उन नियमों पर आंख बंद करके चलता हुआ दिखेगा जो समाज उसके लिये बनायेगा। ऐसे में सामाजिक परिवर्तन की संभावना नहीं रह जायेगी। (पृ. 12)

यद्यपि अब औपचारिकतावादियों तथा तात्विकतावादियों के बीच छिड़ी बहस बीते दिनों की बात हो चुकी है, फिर भी समस्याएँ तो अब भी मौजूद हैं। परन्तु एक बात है, जो समाज को एक सम्पूर्ण इकाई मानते हैं, जैसा कि तात्विकतावादी, वे यह समझाने की कोशिश करते हैं कि लोग समाज का निर्माण करने के लिये किस प्रकार प्रोत्साहित होते हैं, समाज का क्या महत्व है, दूसरी ओर वे लोग जो समाज के स्थान पर व्यक्तिगत इच्छाओं को केंद्र में रखकर सोचते हैं वे औपचारिकतावादी कहलाते हैं।

औपचारिकतावादी यह बात समझाने में असमर्थ हैं कि लोग कुछ चीजों को महत्व क्यों देते हैं, तथा अन्य चीजों को महत्व क्यों नहीं देते। (पृ. 12)

## 2.2.2 तात्विकतावाद

पोलेनी कहता है कि आर्थिक तर्कसंगतता की अवधारणा एक अतिविशिष्ट ऐतिहासिक संरचना है जो बाजारवादी समाज पर मुख्य रूप से लागू होती है। इस विचारधारा का जन्म पूर्व आधुनिककाल में पश्चिमी यूरोप में हुआ था। इस प्रकार पोलेनी उसे सामाजिक रूप से प्रोत्साहित व्यवहार मानता है – एक ऐसा व्यवहार जिसमें परिवार, कुल तथा गांव आदि के हित सन्निहित हैं – यह कोई अपने स्वार्थ पर केंद्रित व्यवहार नहीं है, जो मनुष्यों में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है। तर्कसंगत निजी स्वार्थ अतिविशिष्ट समाज की विशेषता होती है। इसे बाजार मूलक समाज कहते हैं।

आर्थिक तर्कसंगतता के स्थान पर तथा बाजार प्रक्रिया जो पूर्व–बाजार अर्थव्यवस्था को व्यवस्थित रूप दे रहा है, के स्थान पर पोलेनी यह तर्क देता है कि संगठन की साहचर्य पद्धतियाँ पारम्परिक समाजों की श्रेणी में मौजूद हैं। पोलेनी विश्वास दिलाता है कि इतिहास और मानव जाति विज्ञान मौलिक अर्थशास्त्र तथा सामाजिक संस्थानों की विविध कोष प्रदान करता है। बाजार से जुड़े संस्थान ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट हैं और वे अपने आप में देश–काल सम्बंधी पर्याप्त विविधताएँ समेटे हुए हैं। व्यापार, कारीगरी, शिल्प, वस्तुएँ व बाजार के लिए उत्पादन ऐसी गतिविधियां हैं जिनके जड़े प्राचीन मानव समाज में मौजूद हैं। इस प्रकार के आर्थिक आदान–प्रदान के उल्लेख प्राचीनकालीन चीन, यूरोप तथा अमेरिका में पाये जाते हैं। हम यह अच्छी तरह समझ सकते हैं कि सामान्य मानवीय व्यवहार में तथा अंतःक्रियाओं में बार–बार दिखाई पड़ते हैं। इसलिए बाजार कोई ऐसी विशेष ऐतिहासिक सृष्टि नहीं है जैसी पोलेनी बताता है। फिर भी बाजार संस्थान (जैसा कि मार्क्स और वेबर दोनों कहते हैं) उपयोगिता के इर्द गिर्द विकसित हुए हैं या संग्रह, खपत अथवा लाभ के इर्द–गिर्द अस्तित्व में आए हैं। पोलेनी इस बात से सहमत नहीं है कि अधिकतर मानव मौलिक अभिप्रेरण निजी रुचियों की तर्क संगतता पर आधारित होते हैं। इसके ठीक विपरीत पोलेनी कहता है कि व्यक्तियों का सामाजिक मनोविज्ञान अपने आप में एक विशिष्ट ऐतिहासिक उत्पत्ति है। यह मनुष्य की प्रकृति की सदा बने रहने वाली विशेषता नहीं है। वास्तव में पोलेनी एक कदम और आगे बढ़ जाता है और तर्क देता है कि मनुष्यों के व्यवहार को प्रभावित करने में सामाजिक अभिप्रेरण निजी रुचियों की तर्क संगतता की तुलना में अधिक मौलिक होते हैं।''।

अपनी तात्विकतावादी अर्थव्यवस्था के समर्थन में अंतर्निहितता की धारणा का इस्तेमाल करता है। उसके अनुसार अंतर्निहितता का सामाजिक विचार में प्रमुख योगदान होता है। उसकी असक्ति की अवधारणा पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की कटु आलोचना करती है जो समाज और अर्थव्यवस्था दो अलग–अलग क्षेत्र मानती है जिनका एक दूसरे से कोई संबंध नहीं होता।

पोलेनी इस बात पर जोर देता है कि आधुनिक, आर्थिक, विचार की पूरी परंपरा अथवा औपचारिक अर्थव्यवस्था बाजारों पर आधारित है जो मांग और पूर्ति पर आधारित मूल्य तंत्र पर चलती है। जब अर्थशास्त्री यह स्वीकार करते हैं कि कभी–कभी बाजार प्रणाली को बाजारों के घाटे में चले जाने की स्थिति में सरकार से सहायता की आवश्यकता पड़ जाती है। इस अवस्था में भी वे एकीकृत बाजारों की अर्थव्यवस्था की

संतुलन प्रणाली पर निर्भर करते हैं। अपनी पुस्तक 'द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन' में स्व नियंत्रित बाजारों की व्याख्या करते समय पोलेनी कहता है कि कोई समाज किसी न किसी प्रकार की अर्थव्यवस्था के आधार पर ही जीवित रहता है। परंतु अब से पहले कोई ऐसी अर्थव्यवस्था मौजूद नहीं थी जिसे बाजारों द्वारा नियंत्रित किया जाता हो, जब कि पूंजीवादी समाज यह मानकर चलते हैं कि अर्थव्यवस्थायें बाजारों द्वारा नियंत्रित होती है। मानव अर्थव्यवस्था में आधुनिक दौर से पहले कभी ऐसा नहीं हुआ कि आदान–प्रदान के मूल में लाभ अथवा प्राप्ति रहा हो। यद्यपि बाजार नामक संस्थान पाषाण युग के उत्तरार्ध से सामान्यतः चलन में था परन्तु इसकी भूमिका आर्थिक जीवन में घटनात्मक से ज्यादा नहीं थी।

### 2.2.2.1 अंतर्निहितता और तात्विकता अर्थशास्त्र

पोलेनी का आशय यह दिखाना है कि यह अवधारणा किस प्रकार मानव समाज की वास्तविकता, जो मानव इतिहास विवरण है, से किस तरह नितांत भिन्न है। 19वीं शताब्दी से पहले अर्थव्यवस्था समाज आधारित हुआ करती थी जिसे वह तात्विकतावादी अर्थव्यवस्था कहता है। मानव अर्थव्यवस्था आर्थिक अथवा गैर आर्थिक संस्थानों पर आधारित होती है। गैर आर्थिक घटकों का समावेश व्यापक है (जैसे धर्म) पोलेनी यह कहना चाहता है कि किस तरह एक खास समय में कुछ लोगों ने सांस्कृतिक संस्थानों को बुरी तरह मिला–जुला कर रख दिया है।

पोलेनी ने अर्थव्यवस्थाओं की संस्थान अंतर्निहितता तथा सामाजिक आधारितता पर विशेष रूप से जोर दिया है। उसने अर्थव्यवस्था को तात्विक आधार प्रदान किया है। जो मनुष्य तथा उसके पर्यावरण के साथ अंतर्संबंधों की प्रक्रिया से सीधी जुड़ी है और जिसका उद्देश्य आवश्यकताओं की भौतिक आपूर्तियों की सततता को बनाये रखना रहा है। उसने आगे कहा है कि मानव अर्थव्यवस्था संस्थानों पर आधारित है तथा संस्थानों के साथ पूरी तरह लिपटी हुई है। चाहे वे संस्थान आर्थिक हों अथवा गैर आर्थिक गैर आर्थिक क्षेत्र का भी मानव जीवन में व्यापक समावेश होता है – जैसे धर्म अथवा सरकार इनका अर्थव्यवस्था को स्वरूप प्रदान करने तथा उसका संचालन मुद्रा आधारित संस्थानों के रूप में करने अथवा उपकरणों और मशीनों को उसमें शामिल करते हुए करने में ही जिसमें श्रमिकों की आवश्यकता कम हो जाती है, परंतु इनका अपना महत्वपूर्ण योगदान है।

अंतर्निहितता शब्द यह विचार अभिव्यक्त करता है कि अर्थव्यवस्था समाज से अलग कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। जैसा कि तथाकथित शास्त्रीय अर्थशास्त्र कर्ता हमें समझाना चाहते हैं। अर्थव्यवस्था सदैव राजनीति, धर्म तथा सामाजिक सम्बंधों पर आधारित रही है। वह इस बात पर जोर देता है कि माल्थस तथा रिकार्डो आदि शास्त्रीय अर्थशास्त्री अपने से पहले हुए अर्थशास्त्रियों के प्रति कितने उग्र रहे हैं। सामान्य ऐतिहासिक पद्धति में अर्थव्यवस्था समाज के अधीन मानी जाती थी। स्व नियंत्रित बाजारों की प्रणाली समाज को अपने नियंत्रण में लेने के तर्क पर आधारित है। अपनी पुस्तक 'द ग्रेट ट्रांस्फोर्मेशन' के एक भाग में पोलेनी ने लिखा है – ''अंततः एसा क्यों हो रहा है कि बाजार आर्थिक प्रणाली को प्रभावित कर रहा है, समाज बाजार का अनुलग्नक मात्र रह गया है। अर्थव्यवस्था सामाजिक सम्बंधों पर आधारित नहीं रह गई है। सामाजिक संबंध आर्थिक प्रणाली पर आधारित हो गये हैं।''

तात्विकतावादी अर्थव्यवस्था में सैद्धांतिक रूप से अर्थव्यवस्था मनुष्यों के सामाजिक संबंधों के अधीन तथा उनसे संलग्न रहती है। मनुष्य ऐसा व्यवहार नहीं करता कि भौतिक पदार्थों के संग्रह में केवल अपना ही हित साधे। वह इस तरह व्यवहार करता है कि उसकी अपनी सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। उसका सामाजिक महत्व स्थापित हो, समाज में उसका स्तर, उसकी समृद्धि बढ़े केवल इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह भौतिक पदार्थों को महत्व देता है। उत्पादन के तरीके, उत्पादों के वितरण आदि के केंद्र में आर्थिक लाभ नहीं होता, बल्कि सामाजिक हित या समाज में उसके अपने महत्व का भाव रहता है और सारे प्रयास इसी दिशा में किये जाते है। सीमित स्तर पर शिकार करके गुजारा करने वाली या मछलियों सुविशाल निरकुश समाज की रुचियों से पूरी तरह भिन्न होती है। स्थिति चाहे जो हो परन्तु अर्थ प्रणाली गैर आर्थिक मंतव्यों से ही संचालित होती है। मालिनोवस्की के कुला–व्यापार'को पोलेनी तात्विकतावादी अर्थव्यवस्था का उदाहरण मानता है। (1977) पोलेनी कहता है कि पूर्ण स्व नियंत्रित बाजारवादी अर्थव्यवस्था मनुष्यों तथा प्रकृति के वातावरण।

पोलेनी कहता है कि शास्त्रीय अर्थशास्त्रीयों ने ऐसे समाज का विचार सामने रखा जिस पर अर्थव्यवस्था प्रभावी ढंग से आधारित है तथा इसके लिए वे वैचारिक प्रचार के उद्देश्य को पूरा करने के हेतु राजनैतिक उपकरण का इस्तेमाल करते हैं। वह इस बात पर भी जोर देता है कि लोग यह उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पाये और प्राप्त कर भी नहीं सकते थे। पोलेनी बार–बार यह कहता है कि समाज से अलग तथा स्व–नियंत्रित बाजारवादी अर्थव्यवस्था का उद्देश्य एक कपोल–कल्पना मात्र है। वे एक ऐसी अवस्थिति की कल्पना कर रहे हैं जिसका अस्तित्व ही नहीं है। उदाहरण के लिए अपनी पुस्तक 'द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन के प्रथम भाग के पहले पृष्ठ पर वह लिखता है – ''हमारे शोध का निष्कर्ष यह है कि स्व नियंत्रित बाजारों का विचार एक आधारहीन परिकल्पना है। इस तरह का संस्थान अधिक लम्बी अवधि तक टिक नहीं पायेगा। क्योंकि मनुष्य तथा समाज के सार–तत्व का नाश किये बिना बाजारवादी अर्थव्यवस्था लम्बे समय तक जिंदा नहीं रह सकती। इस अर्थव्यवस्था ने मनुष्य को शारीरिक रूप से भारी क्षति पहुँचाई है तथा अपने परिवेश को उजाड़ बना दिया है। (पोलेनी, 1977)।

पोलेनी कहता है कि पूरी तरह स्वतंत्र बाजारों वाली अर्थव्यवस्था को जन्म देने का अर्थ यह है कि मनुष्य तथा प्राकृतिक पर्यावरण दोनों ही निपट वस्तुओं में बदल जायेंगे। अर्थात वे भी बाजार में बेचे और खरीदे जा सकेंगे। इसका परिणाम यह होगा कि समाज तथा प्रकृति के पर्यावरण को नष्ट होना होगा। पोलेनी के अनुसार स्वतंत्र बाजारों के अथवा बाजारों की स्वतंत्रता की वकालत करने वाले सिद्धांतकार मानव–समाजों को लगातार खड़ी चट्टान की और धकेल रहे हैं। इस प्रक्रिया में अनर्गल रूप से बाजार अस्तित्व में आ गये हैं, लोग विरोध करते हैं तो खड़ी चट्टान से टकराकर नष्ट हो जाते हैं। अब यदि वे स्व–संचालित बाजारों के सिद्धांतों को त्याग कर समाज व प्रकृति को विनाश से बचाने के उद्देश्य से वापस लौटते हैं तो यह संभव नहीं हो पाता। आधुनिक औद्योगिक समाज में बाजारों को समाज से अलग करना एक विशाल लचीले बैंड को खींचते चले जाना है। इससे तनाव का स्तर बढ़ेगा ... फिर हम बैंड को और खीचेंगे तो या तो सामाजिक विघटन हो जायेगा या फिर अर्थव्यवस्था और अधिक आश्रित अवस्था में लौट जायेगा। अंततः स्वतंत्र बाजार के समर्थकों का समाज से बाजारों को अलग करने का प्रयास बेनतीजा साबित होगा। (फिर वही, 1977)

पोलेनी का तात्विकतावादी प्रतिमान पूरी तरह सापेक्षवादी है। इसके अनुसार अर्थव्यवस्था पूरी तरह विभिन्न समाजों में विभिन्न तार्किक सिद्धांतों पर आधारित होती है। इसलिए, पूंजीवाद को समझने वाले उपकरण से प्राचीन काल से चली आ रही परम्परागत अर्थव्यवस्था को समझना चाकू से विमान के इंजन की मरम्मत करने जैसा है। वह इस बात पर जोर देता है कि अनुभववादी अर्थव्यवस्था अथवा तात्विकतावादी अर्थव्यवस्था एक दूसरे से अंतर्सम्बन्धित हैं तथा सामाजिक संरचनाओं में रची बसी हैं। गैर आर्थिक घटकों वाली अर्थव्यवस्था सामाजिक समरसता एकता तथा स्थायित्व लाती है। इस अर्थव्यवस्था में इसके मार्ग दरों में पारस्परिक निर्भरता तथा पुनरावर्तन की स्थिति बनी रहती है। बहुत थोड़े से तरीकों के मिले जुले प्रयासों से इसकी उपलब्धि सम्भव हैं – इन्हें एकीकरण के रूप माना जाता है। पोलेनी के लिए अर्थव्यवस्था एकीकरण के तीन रूपों के संतुलन द्वारा व्याख्यायित की जाती हैं – (1) पारस्परिकता (2) पुनर्वितरण तथा (3) आदान–प्रदान। प्रसार के इन तीन तरीकों की अलग–अलग पहचान करता है जो मानव इतिहास में अस्तित्व में आये विभिन्न समाजों में विभिन्न अनुपातों में सदा साथ–साथ मौजूद रही हैं।

### 2.2.2.2 पारस्परिकता, पुनर्वितरण तथा आदान–प्रदान

पारस्परिकता, पुनर्वितरण तथा आदान–प्रदान के तीन आयाम हैं जिनके माध्यम से समाज में चीजों का उत्पादन व विवरण होता है। पारस्परिकता वस्तुओं तथा सेवाओं के वितरण का ऐसा स्वरूप है जिसमें एक दूसरे के प्रति सहयोग व साझेदारी कृतज्ञता का भाव निहित रहता है। वस्तुओं तथा सेवाओं का उन लोगों के बीच आदान–प्रदान होता है जो एक दूसरे से पारिवारिकता, अथवा कुल एकता जैसे सूत्रों से जुड़े होते हैं। पुनर्वितरण वस्तुओं तथा सेवाओं के आदान–प्रदान के उस स्वरूप को दर्शाता है, जहाँ एक केंद्रीय अधिकरण द्वारा हर किसी से वस्तुओं व सेवाओं का संकलन किया जाता है और फिर उन्हें वितरित कर दिया जाता है। इन दोनों व्यवस्थाओं के विपरीत आदान–प्रदान का एक तरीका बाजार–प्रणाली होती है जिसमें उत्पादों के वितरण का आधार उनका मूल्य होता है। पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाएँ मुख्य रूप से एकीकृत होती हैं। पारस्परिकता और पुनर्वितरण इनके आधार होते हैं। जबकि पूंजीवादी समाज आदान–प्रदान की बाजार प्रणाली द्वारा एक दूसरे से जुड़ते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि पूर्व पूंजीवादी समाज के पास सक्रिय बाजार नहीं थे। बाजार स्थल हुआ करते थे, जहाँ पहुँचकर लोग व्यापारिक गतिविधियाँ करते थे। परन्तु ये बाजार स्व–नियंत्रण नियमों द्वारा संचालित नहीं था। यद्यपि वस्तुओं व सेवाओं के वितरणों/संचार को तीनों प्रणालियाँ मौजूद थीं जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में होती हैं। परन्तु प्राथमिकता आदान–प्रदान तथा पारस्परिकता को दी जाती थी तथा पुनर्वितरण को परिधि पर रखा जाता था। व्यवहार प्राथमिकता वाले क्षेत्र को अपनाया जाता था।

पूर्व पूंजीवादी तथा समाजवादी अर्थव्यवस्थाएँ मुख्यतः पारस्परिकता तथा पुनर्वितरण पर ही जोर देती है। ''परिणामस्वरूप वाणिज्यिक आदान–प्रदान के लिए भौतिक रूप से केवल बाजार–स्थल का होना या धन–राशि का मौजूद होना ही पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अस्तित्व के लिए जरूरी नहीं है। अनेक पारंपरिक अर्थव्यवस्थाओं में पैसे/मुद्रा की भूमिका निभाने वाली चीजें पाई जाती थीं, परंतु पैसों का इस्तेमाल सामान्य उपयोग की चीजों के आदान–प्रदान के लिए नहीं किया जाता था, न ही इन्हें सार्वभौमिक मान्यता प्राप्त थी, जैसा कि बाजारवादी अर्थव्यवस्था में होता है। क्योंकि विशेष उद्देश्य के लिए

उपयोग में लाई जाने वाली मुद्रा तथा वस्तुओं अथवा सेवाओं का समाज के खास क्षेत्रों में आपस में ही आदान–प्रदान किये जाने पर प्रतिबंध रहता है।

पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्थायें बहुकेन्द्रित होती है, उनमें आदान–प्रदान के अनेक आयाम मौजूद रहते हैं। इसके ठीक विपरीत पूंजीवादी अर्थव्यवस्थायें एक केन्द्रीय होती हैं। क्योंकि सभी वस्तुएं, सेवायें तथा उत्पादन के स्रोत आदान–प्रदान के एकीकृत क्षेत्र में प्रवाहित होते हैं, जिन्हें बाजार के नियमों द्वारा संगठित किया जाता है और सभी उद्देश्यों के लिये पैसे का इस्तेमाल किया जाता है। आधुनिक बाजारवादी आदान–प्रदान में पैसा और मूल्य निर्धारित करने के लिये सौदेबाजी करना अर्थव्यवस्था का आधार बन गया है। औद्योगिक क्रांति के साथ ही यूरोप की अर्थव्यवस्था बाजार तथा मूल्य केंद्रित हो गई। बाजार प्रणाली केवल तभी अस्तित्व में आती है जब भूमि, श्रम तथा धन आदि फर्जी वस्तुओं के रूप में बाजार में मूल्य लगाये जाने लगते हैं। जब आमदनी अधिकतर लोगों के लिये बाजार पर निर्भर हो जाती है और बाजार स्वयं बाजारवादी अर्थव्यवस्था बन जाते हैं। बाजार समाज पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेते हैं और अंततः बाजार ही समाज बन जाते हैं।

**गतिविधि 1**

पड़ोस में लगने वाले बाजार या हाट या खरीदारी केन्द्र पर जाइये वहां ग्राहकों और दुकानदारों अथवा विक्रेताओं के बीच होने वाली दस गतिविधियों की सूची तैयार कीजिये।

पूजा स्थल, जन्म अथवा मृत्यु स्थल अथवा शादी में जाइये, इन अवसरों पर परिवारों तथा पुजारियों के बीच होने वाले उपहारों अथवा नकदी के आदान–प्रदानों की सूची तैयार कीजिये।

तुलनात्मक दृष्टि से आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदान–प्रदान पर दो पृष्ठों का एक आलेख तैयार कीजिये।

**बोध प्रश्न 1**

1) आर्थिक नृविज्ञान/समाजशास्त्र का क्या अभिप्राय है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) कार्ल पोलेनी के आर्थिक समाजशास्त्र पर किसका प्रभाव पड़ा था?

.....

.....

.....

.....

.....

3) औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद की तुलना 10 पंक्तियों में करिए।

.....

.....

.....

.....

.....

## 2.3 भारत में दान–धर्म : मार्सेल मौस द्वारा उपहार आदान–प्रदान का एक अध्ययन

पारस्परिकता तथा पुनर्वितरण की प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए, आइए कुछ उदाहरणों पर विचार करें – मार्सेल मौस ने अपनी पुस्तक 'गिफ्ट एक्सचेंज' में विविध पूर्व पूंजीवादी समाजों का वर्णन किया है जिनमें यह बताया है कि पारस्परिकता तथा पुनर्वितरण अर्थव्यवस्था के एकीकरण तथा प्रचलन की पूर्व अवस्था है। मेलनेसिया, पॉलिनेसिया, अंडमान द्वीपसमूह तथा उत्तरी अमेरिका के उत्तर पश्चिमी तट के कुछ मामलों की जांच पड़ताल पर आधारित प्रमुख विवरणों को मौस ने उदाहरणों के तौर पर प्रस्तुत किया है। इन समाजों में उपहार अर्थव्यवस्था के तीन नैतिक दायित्वों के लिए पर्याप्त सामग्री प्राप्त हुई। ये तीन दायित्व हैं – देना, प्राप्त करना तथा उपहारों का विनिमय। रोम, भारत तथा जर्मनी आदि देशों में प्राचीन अर्थव्यवस्थाओं के वैधानिक कोड पाये जाते हैं। मौस ने इनमें उपहार अर्थव्यवस्था के अस्तित्व का पता लगाया।

इनके आधार पर मौस ने दान–धर्म के सिद्धांत का पता लगाया जो ब्राह्मणों से संबंधित था। भारत में उपहार आदान–प्रदान का सिद्धांत 'महाभारत नामक' महाकाव्य से लिया गया है। इस महाकाव्य का अनुशासन पर्व में उपहार प्रथा का विशेष रूप से वर्णन है। इस आधार पर मौस ने वैदिक युग में उपहारों के आदान–प्रदान वाली अर्थव्यवस्था के अस्तित्व को स्वीकारा है।

वह महाभारत को असाधारण कुम्भकारों की कहानी मानता है। पोतलेच विभिन्न आदिवासी समाजों में प्रचलित एक परम्परा है (जैसा कि ट्रॉब्रिएंड द्वीपों का अध्ययन करते समय नृविज्ञानी बोनिस्लॉ तथा मेलिनावस्की ने किया था। जिसमें उपहार दिये जाते हैं यह सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि के प्रतीक के रूप में नष्ट कर दिये जाते हैं। मौस महाभारत में कौरव–पांडवों के बीच हुए पाशों के खेल को पॉटलेच का भारतीय संस्करण मानता है। वह महाभारत में सेन्य महोत्सव का भी वर्णन करता है, जिसमें द्रौपदी अपने लिए पति चुनती है।

इस प्रकार आर्थिक धर्मशास्त्र एक विचार प्रस्तुत करता है कि उपहार देने वाले का विस्तार होता है, अर्थात उपहार में व्यक्ति स्वयं को ही दे डालता है। एक अर्थ में उपहार देने वाले दूर नहीं जाता है। बल्कि, ऐसा कहा जाता है कि – ''दान के रूप में जो कुछ इस जन्म में दिया जाता है, वह देने वाले को अगले जन्म में स्वयं प्राप्त होता है।'' (मौस : 54) इस प्रकार उपहार स्वयं को पुनरोत्पन्न करता है, जैसा कि मौस लिखता है – ''देने वाला जितना देता है, वह उसे वापस मिल जाता है, दान खत्म नहीं होता, बल्कि वह पुनरूत्पादित हो जाता है। देने वाले को दिया हुआ और

बढ़कर वापस मिलता है। किसी को भोजन देने का मतलब है इस जन्म में दिया गया भोजन देने वाले को विभिन्न रूपों व मात्राओं में अगले जन्मों में प्राप्त होगा। लोग इसीलिए कुँए खुदवाते थे। जो पानी के स्रोत दान किये जाते थे, वे प्यास के जीवन–बीमा की तरह माने जाते थे। इसी प्रकार कपड़े, शीतल छाया, सोना, तपती धरती से सुरक्षा के लिए चप्पल आदि का दान इसीलिए दिया जाता था कि वह सब इस जीवन का भविष्य में अन्य जीवनों वापस मिल जायेगा, वह भी बढ़कर।

वह आगे तर्क देता है कि यह अर्थव्यवस्था नैतिक व आर्थिक रूप से नियंत्रित थी जिसमें किसी औपचारिक करार, लिखित दस्तावेज, बौंड आदि की आवश्यकता नहीं थी। आज की बाजार मूलक अर्थव्यवस्था से यह व्यवस्था, नितांत भिन्न थी। बाजारमूलक अर्थव्यवस्था में चीज प्राप्त करने के लिए उनकी कीमत चुकानी पड़ती है।

उम्मीद है अब तक आपको औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद में अंतर समझ में आ गया होगा। अपनी पुस्तक 'गिफ्ट एक्सचेंज' में मौस ने औपचारिकतावाद और तात्विकतावाद के बीच छिड़ी बहस की सीमाओं को चिन्हित किया है। तात्विकतावाद विचार धारा का एक सबसे बड़ा योगदान यह है कि इसने पूंजीवाद को वैश्विक अर्थव्यवस्था बताने वालों को चुनौती दी है। एशिया तथा अफ्रीका के विभिन्न समाजों में मौजूद रही पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं का अध्ययन करके तात्विकतावादियों ने यह साबित कर दिया है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं के विकल्प मौजूद हैं। कार्ल पोलेनी ने पारस्परिकता तथा पुनर्वितरण पर आधारित समाजवादी अर्थव्यवस्था वैकल्पिक रूप में प्रस्तावित किया था, परन्तु आर्थिक समाजवाद तथा नृविज्ञान के बीच की बहस की अपनी सीमायें हैं। जहां यह वस्तुओं और सेवाओं के वितरण को केन्द्र में रखकर चलती है वहीं वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के अर्थव्यवस्था में महत्व को नजरअंदाज कर देती है। जबकि सच्चाई यह है कि उत्पादन एवं वितरण दोनों ही अर्थव्यवस्था के अलग–अलग क्षेत्र हैं। यही कमी मौस के अर्थव्यवस्था संबंधी उपहारों के आदान–प्रदान संबंधी विचारों को लेकर है जो उन्होंने भारत के लोकप्रिय महाकाव्य महाभारत से ली है।

### 2.3.1 उपहारों के आदान–प्रदान की आलोचना

पहली बात तो यह है कि जिस उपहार मूलक अर्थव्यवस्था का विश्लेषण मौस ने किया है वह भारत में अब मौजूद ही नहीं है। तीन महत्वपूर्ण दायित्व जो मॉस के अनुसार उपहार अर्थव्यवस्था में अंतर्निहित हैं, वे है – देने का दायित्व, प्राप्त करने का दायित्व तथा पारस्परिकता का दायित्व। भारतीय संदर्भ में देने का दायित्व ब्राह्मणों के संदर्भ में अस्तित्व में ही नहीं है, हां ब्राह्मणों में प्राप्त करने का दायित्व जरूर मिलता है इसी प्रकार क्षत्रियों में प्राप्त करने का दायित्व होता ही नहीं है केवल देने का दायित्व होता है, इस पूरे प्रकरण में शूद्र पूरी तरह गायब हैं, क्योंकि ब्राह्मण उनसे दान में पक्का खाना लेते ही नहीं। दायित्व वाली इस प्रथा से अछूत पूरी तरह गायब हैं। थॉमस ट्रॉटमानिन ने मॉस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है –

'महाभारत में पॉटलैच की बात करें तो, समझ में आयेगा कि मॉस क्या कहना चाहता है। लड़ाकू वर्ग जो दुश्मनी की भावना से भरे थे और प्रतिष्ठा की ग्रंथि से पीड़ित थे वे पाशे के खेल में उद्यत हुए। जिसमें उन्होंने स्वेच्छा से सबकुछ दाव लगा दिया। उन्होंने धन विद्या में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया और राजकुमारियों को विवाह हेतु प्राप्त करने के आयोजन भी किये। वे धन को इकट्ठा करने में प्रतिष्ठा और शान

का इतना अनुभव नहीं करते थे जितना इन प्रतियोगिताओं को जीतने में। इस तरह हम देखते हैं कि पॉटलैच लोकाचार पूरी तरह इनमें मौजूद था। पाशों का खेल अथवा ऐसी ही अनेक प्रकार की अन्य प्रतियोगिताएं जिनमें सब कुछ दाव पर लगा दिया जाता था और सब कुछ हार जाने की संभावनाएं सन्निहित थीं, ऐसी चीजों में तो महाभारत के नायक पूरी तरह लिप्त दिखाई देते हैं, परन्तु दान प्रतियोगिताओं का आयोजन करने में जिनमें अधिक से अधिक देकर विरोधी को हरा दिया जाये, वे रुचि लेते नहीं दिखते। इस दौर के नायकों में ऐसे नैतिक मानदंड भी दिखाई नहीं पड़ते जो पॉटलैच प्रतियोगिताओं की तुलना में उच्चतर दिखते। जिनमें देने के दायित्व प्राप्त करने के दायित्व तथा पारस्परिकता के दायित्व पॉटलैच प्रतियोगिताओं के नियम समझे जा सकते हैं। इस दौर के योद्धाओं में जो विशेषतायें देखने को मिलती हैं उनमें क्षत्रिय धर्म सबसे ऊपर है। जैसे राजा ऐसे किसी प्रस्ताव को स्वीकार करने से साफ इन्कार कर देते थे जो हीनता तथा दासता का प्रतीक हो (हारा, 1974)। केवल ब्राह्मण ही उपहार स्वीकार करने का दायित्व निभाते थे। दान देने तथा पारस्परिक रूप से उपहारों अथवा दान के आदान प्रदान की परम्परा ब्राह्मणों में थी ही नहीं। इस प्रकार महाभारत के अनुशासन पर्व के अनुसार जिसमें दान देना इतना सौहार्दपूर्ण दिखाई देता है कि पान देने वाला जैसे स्वयं को ही दान कर रहा हो उसमें उसका व्यक्तित्व एक तरफा दिखाई पड़ता है। परंतु जो व्यक्ति दान लेता है जैसे ब्राह्मण, उसके अंदर बदले में कुछ देने की इच्छा दिखाई ही नहीं पड़ती ऐसे में दान, धर्म को अर्थव्यवस्था का आधार कैसे माना जा सकता है।

## 2.4 सारांश

इस इकाई में आपने औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद के बीच आर्थिक नृविज्ञान में छिड़ी बहस के बारे में पढ़ा। औपचारिकतावादियों का तर्क है कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तथा इससे संबंधित विचारों को विश्व स्तर पर स्वीकार किया जाना चाहिए। जबकि तात्विकतावादी कार्ल पोलेनी के विचारों को महत्व देते हैं और औपचारिक अर्थव्यवस्था की आलोचना करते हैं। उनका तर्क यह है कि पूर्व–पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में जो सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ निहित थे, केवल निजी लाभ नहीं, उन्हें महत्व दिया जाना चाहिए। तात्विकतावादी उत्पादों व सेवाओं के समाज में वितरण के तीन रूपों पर जोर देते है, ये हैं – पारस्परिकता, पुनर्वितरण तथा आदान–प्रदान। पोलेनी पूंजीवादी उत्पादन के तरीकों को (जिसकी व्याख्या उसने बाजारवादी अर्थव्यवस्था तथा बाजार–समाज के रूपों में की है) आर्थिक संगठन के अन्य तरीकों से, सामाजिक निर्भरता के आधार पर भिन्न मानता है। उसका कहना है कि पूर्व पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं में उत्पादन की प्रक्रिया कम या ज्यादा परिवार, आस–पड़ोस, समुदाय आदि विविध संस्थानों पर आधारित थी। पूर्व पूंजीवादी उत्पादन की इस आधारितता या निर्भरता ने पोलेनी को आर्थिक जीवन के रूपों को वितरण के पारस्परिक सिद्धांतों के आधार पर समझने के लिए प्रेरित किया, न कि उनके उत्पादन के सामाजिक सम्बंधों के आधार पर।

इस प्रकार पोलेनी तर्क देता है कि उत्पादन को अन्य सामाजिक गतिविधियाँ से अलग कर देना ठीक नहीं है। भौतिक संसाधनों का वितरण संचालन के सिद्धांतों से प्रभावित होता है, यह बात सब जानते हैं। परन्तु पूंजीवाद का अभ्युदय ने भौतिक उत्पादन को सभी गैर–सामाजिक संस्थानों से अलग कर दिया और स्व नियंत्रित बाजारों वाली

अर्थव्यवस्था को विकसित होने के सस्ते खोल दिये जिसके संचालन के मूल में अवस्थित अधिकतम लाभ कमाने की प्रवृत्ति को आर्थिक तर्क संगतता माना जाने लगा।

## 2.5 संदर्भ


- इकॉनोमिक एंथ्रोपोलॉजी : एन अनडिसीप्लिंड डिसीप्लिन (फ्रॉम द रीडर)
- इंट्राड्यूसिंग इकॉनोमिक सोस्योलॉजी – जे नील स्मैल्सर एण्ड रिचार्ड स्वदेवर्ग, मार्सेल मौस : द गिफ्ट।
- द गिफ्ट इन इंडिया, एच ए यू जर्नल ऑफ एथनोग्रेफिक थ्यौरी 7, नं. 2, पृ. 485–496 – थॉमस ट्रॉटमेन, 2017।
- सटेंटिविज्म, कल्चरेलिज्म एण्ड फॉर्मेलिज्म इन इकॉनोमिक एंथ्रोपोलॉजी – सरग्यू बालान।
- 'द लाइवलीहूड ऑफ मेन' – कार्ल पोलेनी न्यूयार्क एकेडैमिक प्रैस, 1977 चैप्टर्स 1 व 2 – द इकॉनोमिस्ट फेलेसी एण्ड टू मीनिंगस ऑफ इकॉनॉमिक पृ. 5–34.
- ''इकॉनोमी एज एन इंस्टीट्यूटिड प्रौसेज – कार्ल पोलेनी। द सोश्योलॉजी ऑफ इकोनामिक लाइफ – एमग्रेनोवेटर एण्ड आर स्वेडवर्ग वैस्ट न्यू प्रैस, कोलोरेडो, बोल्डर, 1992 (पृ. 29–50)।
- द ग्रेट ट्रांस्फॉर्मेशन, इंट्रोडक्शन, चेप्टर 4 एंड 5 – कार्ल पोलेनी।
- प्रीफेस टू ए कंट्रीब्यूशन टू द क्रिटिक ऑफ पॉलिटीकल इकोनॉमी इन सलैक्टिड वर्क्स वॉल्यूम–1, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मॉस्को 1859, पृ. 502–506।
- एंसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल एण्ड कल्चरल एंथ्रोपोलॉजी – ए बनार्ड एण्ड जे स्पेंसर रूटलैग, लंदन 1996, पृ. 172–8।
- इकॉनोमिक्स एण्ड कल्चर : फाउंडेशन्स एकॉनोमिक एंथ्रोपोलॉजी – वैस्ट व्यू प्रैस कोलोराडो, बोल्डर 1996 चेप्टर 1 पृ. 1–18 – आर विल्क।
- इकॉनोमिक एंथ्रोपोलॉजी – क्रिस हान एण्ड हार्ट कीथ – पोलिटी प्रैस 2011 चैप्टर – 5।
- आफ्टर द फोर्मेलिस्ट स्बसटेंटिविस्ट डिबेट पृ. 72–99 चेप्टर – 2, इकॉनोमी फ्रॉम द एंसियेंट वर्ल्ड टू द एज ऑफ इंटरनेट, पृ. 18–36।


## 2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

**बोध प्रश्न 1**

1) आर्थिक नृविज्ञान/समाजशास्त्र को दो विचारधाराओं के माध्यम से समझा जा सकता है – (i) औपचारिकतावाद (ii) तात्विकतावाद एक का संबंध शास्त्रीय अर्थशास्त्र से है जिसे मेलविले हर्सकूरिस्ट ने प्रतिपादित किया है जो पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से जुड़ा है। दूसरा तात्विकतावाद है जिसका सम्बंध गैर–पूंजीवादी समाजों के आर्थिक जीवन से है, जैसे कार्ल पोलेनी।

2) जर्मनी के समाजशास्त्री, मेक्स वेबर का कार्ल पोलेनी पर प्रभाव था।

3) औपचारिकतावाद तथा तात्विकतावाद की स्थापना कार्ल पोलेनी ने की थी जिनके दोनों में अलग–अलग पद्धति विज्ञान संबंधी विभेद हैं। औपचारिकतावाद एक विशेष प्रकार के समाजशास्त्र से जुड़ा है जिसके मूल में निगमात्मक तथा तर्कसंगत विचारधारा है। जबकि तात्विकतावाद नृविज्ञान से जुड़ी विचारधारा है जो अनुभव तथा व्याख्या पर आधारित है। औपचारिकतावादी विचारधारा आर्थिक अधिसंख्य व्यक्तियों की आर्थिक तर्कसंगतता पर आधारित है। जबकि तात्विकतावाद एक ऐसी अर्थव्यवस्था में विश्वास रखता है जो सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भों से संबंधित है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY